श्रावण मास, कृष्ण पक्ष 1 वर्ष, अंक 46, पृष्ठ 4, मूल्य 1.00

अखण्ड भारत सन्देश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज सोमवार, 21 सितम्बर, 2020

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान की एक अनुपम भेंट

यूपी में 50 की उम्र पार भ्रष्ट पुलिसकर्मी होंगे जबरन रिटायर

सिपाही से इंस्पेक्टर तक होगी स्क्रीनिंग

लखनऊ, जेएनएन। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर उत्तर प्रदेश के सरकारी विभागों में भ्रष्ट और अक्षम कर्मचारियों को चिह्नित कर उन्हें अनिवार्य सेवानिवृत्ति दिये जाने के कार्य में तेजी आ गई है। स्वास्थ्य विभाग के बाद अब पुलिस विभाग ने भी इस संबंध में आदेश जारी कर दिए हैं। भ्रष्टाचार के आरोपों से घिरे या अक्षम पाये गए उत्तर प्रदेश पुलिस के 50 वर्ष से अधिक उम्र के पुलिसकर्मियों की स्क्रीनिंग कर उन्हें जबरन रिटायर किया जाएगा। पुलिस महानिदेशक कार्यालय ने सभी जिलों को ऐसे पुलिसकर्मियों को चिह्नित कर उनके नामों की सूची भेजने का निर्देश दिया है।

पुलिस महानिदेशक कार्यालय की ओर सभी जिलों को भेजे गए दिशा निर्देश में 31 मार्च, 2020 को 50 वर्ष की उम्र पूरी करने वालों की स्क्रीनिंग करने के लिए कहा गया है। इसके लिए सिपाही से लेकर इंस्पेक्टर स्तर तक की स्क्रीनिंग की जाएगी। भ्रष्टाचार में लिप्त या काम में अक्षम पाये जाने वाले पुलिसकर्मियों को अनिवार्य सेवानिवृत्ति दी जाएगी। इस बाबत डीजीपी हितेश चंद्र अवस्थी ने कहा कि यह शासन की पुरानी व्यवस्था है। ऐसी स्क्रीनिंग हर साल की जाती है।

बाते दें कि यह कार्रवाई मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की ओर से सरकारी विभागों में 50 वर्ष की उम्र पूरी कर चुके भ्रष्ट और अक्षम कार्मिकों को चिह्नित कर उन्हें अनिवार्य सेवानिवृत्ति दिये जाने के निर्देश पर की जा रही है। पूर्व में गृह विभाग की एक समीक्षा बैठक में सीएम योगी ने भ्रष्ट और अक्षम पुलिसकर्मियों पर नाराजगी जतायी थी। उन्होंने कहा था कि प्रदेश को ऐसे पुलिसकर्मियों की जरूरत नहीं है जो अपनी नौकरी और व्यवस्था के प्रति ईमानदार नहीं हैं। इस सिलसिले में पिछले वर्ष भी सभी जोनल पुलिस प्रमुखों को पत्र भेजा गया था।

बता दें कि इससे पहले स्वास्थ्य

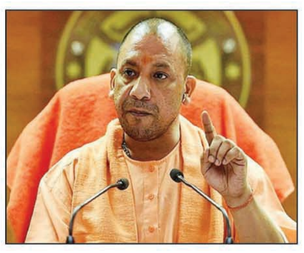

विभाग के कार्यालयों और अस्पतालों में भ्रष्टाचार में लिप्त और खराब परफार्मेंस वाले 50 वर्ष से अधिक आयु के बाबुओं को सूचीबद्ध कर इन्हें जबरन रिटायर किए जाने के आदेश जारी हो चुके हैं। इसके लिए चार सदस्यीय स्क्रीनिंग कमेटी बनाई गई है। स्क्रीनिंग कमेटी को आदेश दिए गए हैं कि खराब परफार्मेंस वाले क्लर्कों को सूचीबद्ध करें, ताकि इन्हें तत्काल रिटायर किया जा सके। निदेशक (प्रशासन) डॉ. पूजा पांडेय की ओर से स्क्रीनिंग कमेटी के गठन के आदेश जारी कर दिए गए हैं। 50 वर्ष से अधिक आयु के क्लर्कों को स्क्रीनिंग कर जबरन रिटायर किया जाएगा।

घर तक फाइबर स्कीम की प्रधानमंत्री आज करेंगे शुरूआत

नई दिल्ली, जेएनएन। गांवों के हर घर को ब्रॉडबैंड कनेक्शन से जोड़ने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सोमवार को 'घर तक फाइबर' स्कीम की शुरूआत करेंगे। इस स्कीम की शुरूआत बिहार से होगी। बिहार के 45,945 गांवों को अगले 100 दिनों में ऑप्टिकल फाइबर से जोड़ने का लक्ष्य रखा गया है। 15 अगस्त को प्रधानमंत्री ने अगले 1,000 दिनों में देश के हर गांव को ऑप्टिकल फाइबर से जोड़ने की घोषणा की थी। इस घोषणा की शुरूआत 'घर तक फाइबर' नाम से सोमवार से हो रही है। सोमवार से ही प्रधानमंत्री की घोषणा पर अमल भी शुरू हो जाएगा। ऑप्टिकल फाइबर से जुड़ने से गांव के लोग इंटरनेट सुविधा के लिए ब्रॉडबैंड का इस्तेमाल कर सकेंगे। इसके तहत उन्हें काफी अधिक स्पीड में इंटरनेट की सुविधा मिलेगी। घर तक फाइबर पहुंचाने के काम में स्पेशल पर्पज व्हीकल (एसपीवी) की भूमिका निभाने वाले कॉमन सर्विस सेंटर (सीएससी) के सीईओ दिनेश त्यागी ने बताया कि गांव स्तर के उद्यमियों की मदद से हर गांव में ऑप्टिकल फाइबर पहुंचाया जाएगा। सीएससी इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत काम करता है। उन्होंने बताया कि भारत नेट कार्यक्रम के तहत जिन ग्राम पंचायतों में ऑप्टिकल फाइबर पहुंच गई है, वहां से बाकी के गांवों में ऑप्टिकल फाइबर पहुंचाने का काम किया जाएगा। त्यागी ने बताया कि बिहार के सभी गांवों को सोमवार से ऑप्टिकल फाइबर से जोड़ने का काम शुरू हो जाएगा और अगले 100 दिनों में यह काम पूरा कर लिया जाएगा।

COVID-19 के बढ़ते संक्रमण के कारण उत्तर प्रदेश में 21 से नहीं खुलेंगे स्कूल

लखनऊ, जेएनएन। कोरोना वायरस संक्रमण के दौरान अनलॉक 4.0 में भले ही केंद्र सरकार की गाइडलाइन में कंटेनमेंट जोन के बाहर 21 सितंबर से कक्षा नौ से 12 तक के स्कूल खोलने की अनुमति दी गई है, लेकिन उत्तर प्रदेश में स्कूल नहीं खुलेंगे। प्राइवेट स्कूल्स के इस फैसले के बाद से सरकारी स्कूल भी प्रदेश में बढ़ते कोरोना वायरस संक्रमण के कारण फिलहाल अभी नहीं खुलेंगे।

कोरोना वायरस के बढ़ते संक्रमण के कारण उत्तर प्रदेश में 21 सितम्बर से आंशिक रूप से भी स्कूल-कॉलेज नहीं खुलेंगे। प्राइवेट के साथ ही सरकारी स्कूल्स को कोरोना वायरस से लगातार बढ़ते संक्रमण के कारण अभी खोलना संभव नहीं हो पा रहा है। प्रदेश के उपमुख्यमंत्री दिनेश शर्मा ने पहले ही ऐसे माहौल में स्कूल-कॉलेज खोलने में असमर्थता जता दी थी। इसके बाद ही प्रदेश में माध्यमिक शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने इसकी पुष्टि की है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में बढ़ते कोरोना के मामलों को देखते हुए स्कूल-कॉलेजोंको खोलना संभव नहीं है। इससे पहले प्रदेश के उपमुख्यमंत्री दिनेश शर्मा ने भी 21 सितंबर से प्रदेश में स्कूलों के खोले जाने पर असमर्थता जताई थी।

कोरोना के बढ़ते मामलों को देखते हुए डॉ.दिनेश शर्मा ने कहा था कि 21 सितंबर से राज्य में आंशिक रूप से स्कूल खोलने की संभावना बहुत कम है। उन्होंने कहा था कि प्रदेश में कोरोना के केस लगातार बढ़ रहे हैं। ऐसे में कम से कम एक महीने तक तो आंशिक रूप से भी कार्य करने की अनुमति नहीं दी जा सकती। छात्र-छात्राओं की सुरक्षा सबसे ऊपर है और इससे किसी भी तरह समझौता नहीं किया जा सकता है। स्कूलों को खोलने पर फैसला मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में होने वाली बैठक में लिया जाएगा।

राजधानी लखनऊ के प्राइवेट स्कूल, एसोसिएशन ने प्रदेश में कोरोना संक्रमण के लगातार बढ़ रहे मामलों को देखते हुए स्कूल 21 सितंबर से न खोलने का फैसला लिया है। स्कूल एसोसिएशन के अध्यक्ष अनिल अग्रवाल ने बताया कि स्कूलों के स्तर पर तैयारियां पूरी की गई हैं, लेकिन वर्तमान स्थिति को देखते हुए फिलहाल अभी खोलने का फैसला नहीं लिया गया है। फिलहाल ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से बच्चों की पढ़ाई जारी रहेगी।

बेसिक शिक्षा विभाग ने भी स्कूलों को खोलने के लिए बड़ा निर्णय लिया है। इसके तहत फिलहाल तो ऑनलाइन ही पढ़ाई होगी। इसके लिए एक टाइम टेबल बनाया गया है, जिसे स्कूलों के साथ साथ छात्रों को भी दिया जाएगा। टाइम टेबल के हिसाब से ही सभी शिक्षक ऑनलाइन क्लासेज लेंगे।

केंद्र सरकार की ओर से जारी दिशा निर्देशों के तहत 21 सितंबर से स्कूल खोले जाने को लेकर छूट दी गई है। इस क्रम में कई राज्यों में 21 सितंबर से स्कूल खोलने को लेकर हरी झंडी भी दी जा चुकी है। यूपी में बेसिक शिक्षा विभाग और प्राइवेट स्कूल ऑनलाइन शिक्षा ही मुहिया कराएंगे। गौरतलब है कि केंद्र सरकार ने अनलॉक 4.0 की गाइडलाइन्स जारी करते हुए राज्य सरकारों को कंटेनमेंट जोन के बाहर के स्कूलों-कॉलेजों को खोलने की अनुमति दे दी थी।

अनलॉक 4.0 की गाइडलाइंस में 10वीं और 12वीं के छात्रों के स्कूल खोलने की अनुमति दी गई थी लेकिन उसमें कहा गया था कि इसमें पैरेंट्स की अनुमति होनी चाहिए। पैरेंट्स जब लिखकर देंगे तभी बच्चा स्कूल जा सकता है। केंद्र सरकार ने शिक्षा निदेशालय से एक फॉर्म के जरिए इस मामले में पैरेंट्स की राय जानने की सलाह दी थी। गूगल फॉर्म में ज्यादातर अभिवावकों ने अपने बच्चों को स्कूल भेजने से मना कर दिया है

चीन से तनातनी के बीच एलएसी की छह नई चोटियों पर भारतीय सेना ने जमाया डेरा

नई दिल्ली, एएनआइ। चीन के साथ तनातनी के बीच भारतीय सेना ने पिछले तीन हफ्ते में पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर छह नई चोटियों पर डेरा जमाया है। 29 अगस्त से सितंबर के दूसरे हफ्ते के बीच भारतीय सेना मागर हिल, गुरुंग हिल, रेचन ला, रेजांग ला, मुखपरी और फिंगर 4 के नजदीक एक ऊंची चोटी पर काबिज हुई है। रणनीतिक रूप से अहम इन चोटियों से चीनी सेना की हरकतों पर नजर रखना आसान हुआ है।

इन चोटियों पर कब्जे की चीन की कोशिशों के चलते ही एलएसी पर पिछले कुछ दिनों के भीतर तीन बार गोलियां चली हैं। भारत-चीन सीमा पर

45 साल बाद गोली चली है। इन चोटियों पर भारतीय सेना के कब्जे के बाद चीन ने रेजांग ला और रेचन ला के नजदीक अपने सैनिकों की तैनाती बढ़ा दी है। चीन की आक्रामकता के बाद भारतीय सुरक्षा बलों ने भी सक्रियता बढ़ा दी है। यहां राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल, चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल बिपिन रावत और सेना प्रमुख एमएम नरवाने की निगरानी में गतिविधियों को अंजाम दिया जा रहा है। गलवन घाटी में चीनी सेना की चालबाजी के कारण जून में हुई हिंसक झड़प के बाद भारत ने सीमा पर हथियार प्रयोग नहीं करने की नीति में भी बदलाव कर दिया है। गलवन में हुई हिंसक झड़प में 20 भारतीय जवान शहीद हुए थे। विभिन्न रिपोर्टों में सामने आया है कि चीन के भी करीब 40 सैनिक इस घटना में मारे गए थे। हालांकि चीन ने आज तक अपने मारे गए सैनिकों की जानकारी नहीं दी है।

यूपी में कोविड-19 संक्रमितों का आंकड़ा साढ़े तीन लाख के पार

लखनऊ, जेएनएन। उत्तर प्रदेश में कोरोना वायरस के संक्रमण का प्रकोप अभी थमा नहीं है। रविवार को कोरोना वायरस से संक्रमित 5,809 नए रोगी मिले और इससे अधिक 6,584 स्वस्थ हुए। यह लगातार तीसरा दिन है जब नए मरीजों के मुकाबले स्वस्थ होने वाले रोगियों की संख्या कहीं अधिक है। उत्तर प्रदेश में अब कुल मरीजों का आंकड़ा 3,54,275 पहुंच गया है। वहीं इसमें से 2,83,274 रोगी स्वस्थ हो चुके हैं। यानी करीब 80 फीसद रोगी अब तक स्वस्थ हो चुके हैं। उत्तर प्रदेश में कोरोना वायरस से संक्रमित मरीजों के लगातार स्वस्थ होने के कारण पिछले तीन दिनों में एक्टिव केस 2,281 कम हुए हैं। अब एक्टिव केस 65,954 हैं। वहीं बीते 24 घंटे में 94

लोगों की और मौत हुई। अभी तक यह खतरनाक वायरस 5,047 लोगों की जान ले चुका है। रविवार को 1,40,754 नमूनो की जांच की गई। बीते 24 घंटे में कोरोना की आरटीपीसीआर जांच के लिए 51,884 सैंपल भेजे गए। बाकी ट्रूनैट और एंटीजन टेस्ट किए गए। अब तक कुल 85,40,604 लोगों की कोरोना जांच की जा चुकी है। देश में सर्वाधिक कोरोना जांच यूपी में हुई है। अभी तक सरकारी कार्यालयों व प्राइवेट प्रतिष्ठानों में 64,507 कोविड हेल्प डेस्क बनाई गई हैं। प्राइवेट अस्पताल में सिर्फ 5.7 प्रतिशत रोगी हुए भर्ती: उत्तर प्रदेश में कोरोना वायरस से संक्रमित 52 फीसद रोगी घर पर अपना इलाज करवा रहे हैं। वर्तमान में 65,954 रोगी हैं और इसमें से 34,119 होम आइसोलेशन में हैं। वहीं 27,818 सरकारी अस्पतालों में इलाज करवा रहे हैं। यानी 42 फीसद मरीज सरकारी अस्पतालों में भर्ती हैं। कोरोना के 3,786 रोगी प्राइवेट अस्पतालों में हैं। प्राइवेट अस्पताल में सिर्फ 5.7 फीसद मरीज भर्ती हैं। वहीं होटल में 231 मरीज आइसोलेट हैं।

भाजपा ने कृषि बिल नहीं, अपना 'पतन-पत्र' पारित कराया : सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव

लखनऊ, जेएनएन। अभूतपूर्व हंगामे और विपक्ष के भारी विरोध के बीच केंद्र सरकार ने रविवार को कृषि सुधारों से जुड़े दोनों विधेयकों को राज्यसभा से ध्वनिमत से पारित करा लिया। कृषि विधेयकों को किसान विरोधी करार देते हुए समाजवादी पार्टी (एसपी) ने राज्यसभा में विधेयक पारित कराए जाने की निंदा की है। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि लोकतांत्रिक कपट कर भाजपा ने कृषि बिल नहीं, अपना ह्यपतन-पत्रह्ल पारित कराया है। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने रविवार को ट्वीट कर कहा कि भारतीय जनता पार्टी ने कृषि बिल पारित कराने के लिए ह्यध्वनि मतह्ल की आड़ में राज्यसभा में किसानों और विपक्ष की आवाज का गला दबाया है। सरकार ने अपने कुछ चुनिंदा पूंजीपतियों और धन्नासेठों के लिए भारत की दो तिहाई जनसंख्या को धोखा दिया है। लोकतांत्रिक कपट कर भाजपा ने कृषि बिल नहीं, अपना ह्यपतन-पत्रह्ल पारित कराया है।

भाजपा ने कृषि बिल पारित कराने के लिए ह्यध्वनि मतह्ल की आड़ में राज्य सभा में किसानों व विपक्ष की आवाज का गला दबाया है व अपने कुछ चुनिंदा पूँजीपतियों व धन्नासेठों के लिए भारत की 2/3 जनसंख्या को धोखा दिया है।

बता दें कि रविवार को अभूतपूर्व हंगामे और विपक्ष के भारी विरोध के बीच केंद्र सरकार ने कृषि सुधारों से जुड़े दोनों विधेयकों को राज्यसभा से ध्वनिमत से पारित करा लिया। इस दौरान संसदीय मयार्दाओं की धज्जियां उड़ाई गई। तृणमूल समेत कई विपक्षी सांसदों ने विरोध के दौरान आसन की माइक तोड़ने से लेकर रूल बुक फाड़ कर हवा में उछालने तक से गुरेज नहीं किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विधेयकों को पारित कराए जाने को देश के कृषि इतिहास का ऐतिहासिक दिन बताते हुए कहा कि इससे किसान सशक्त होंगे और कृषि क्षेत्र में आमूल-चूल बदलाव आएगा। वहीं, विपक्ष ने विधेयकों को पारित कराने के तरीके पर सवाल उठाते हुए इसे लोकतंत्र और संविधान के साथ छल करार दिया और स्थगित होने के बाद भी सदन में धरना देते हुए विरोध प्रदर्शन किया।

ऑनलाइन शिक्षण कार्य महज दिखावा

समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने भाजपा सरकारों को विफलताओं पर कोसा। रविवार को उन्होंने कहा कि सरकार की गलत नीतियों से छात्र-छात्राओं की पढ़ाई बंद है। ऑनलाइन शिक्षण कार्य केवल दिखावा सिद्ध हो रहा है। मंहगाई चरम पर है। सब्जियों व अन्य खाद्य पदार्थो के आसमान छूते भाव से जनता की थाली और थैली दोनों पर मार पड़ रही है। उन्होंने भाजपा की शोषणकारी साजिशों का विरोध करने का एलान करते हुए सोमवार को सभी तहसील मुख्यालयों पर सपा कार्यकताओं द्वारा प्रदर्शन करने व ज्ञापन सौंपने की जानकारी दी।

भाजपा सरकार की मनमानी कार्यशैली से जनता त्रस्त

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि समाजवादी कार्यकर्ता कोरोना से बचाव नियमों का पालन करते हुए अपनी बात मजबूती से रखेंगे। सपा अध्यक्ष ने अपराध वृद्धि व बेरोजगारी जैसे मुद्दों पर सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि एक ओर कोरोना संक्रमण थमने का नाम नहीं ले रहा है दूसरी ओर भाजपा सरकार की मनमानी कार्यशैली व दमनकारी नीतियों से जनता त्रस्त है। अखिलेश ने कहा कि भाजपा सरकार उचित चिकित्सा के अभाव व लापरवाही के लिए जानी जाएगी। प्रदेश की ग्राम पंचायतों में कोरोना किट खरीदने में महाघोटाला हुआ है। रोजगार की मांग कर रहे नौजवानों पर लाठियां चलाकर सरकार अच्छा नहीं कर रही है। मुख्यमंत्री रोजगार के झूठे आंकड़े पेश करके युवाओं को गुमराह करने की कोशिश कर रहे है। उन्होंने कृषि विधेयकों को लेकर एक बार फिर भाजपा को असंवेदनशील बताया। सपा प्रमुख ने कहा कि सरकार किसानों को अपनी जमीन पर ही मजदूर बनाने की साजिश रच रही है। इन कुनीतियों का समाजवादी पार्टी हर स्तर पर विरोध करेगी।

अनलॉक 4 में मध्य प्रदेश, जम्मू कश्मीर, राजस्थान और हरियाणा में खुलेंगे स्कूल

नई दिल्ली, जेएनएन। अनलॉक-4 में कई छूट और सहूलियतें मिलने के बाद कुछ राज्यों ने सोमवार से नौंवी से 12वीं तक छात्रों के लिए स्कूल खोलने का फैसला किया है। हालांकि कई राज्य सहमत नहीं है। उनका और अभिभावकों कहना है कि कोरोना संक्रमण के प्रभाव को देखते हुए बच्चों को स्कूल भेजना खतरे से खाली नहीं है। सोमवार से मध्य प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, राजस्थान और हरियाणा ने कोविड-19 को लेकर जारी दिशा निर्देशों के आधार स्कूल खोलने का निर्णय लिया है। हालांकि दिल्ली, उत्तर प्रदेश, झारखंड, छत्तीसगढ़ और पंजाब में इस पर सहमति नहीं दी

है। बिहार में स्कूल खोलने को लेकर 22 सितंबर को बैठक होगी। छत्तीसगढ़ में भी एक सप्ताह बाद स्कूल को लेकर फैसला होगा। झारखंड में भी 30 सितंबर तक सभी स्कूल बंद रहेंगे।

सोमवार से जम्मू-कश्मीर में पचास प्रतिशत स्टाफ के साथ स्कूल खुलेंगे। विद्यार्थियों व स्टाफ के लिए मास्क पहनना अनिवार्य होगा। बच्चे अपने साथ सैनिटाइजर रखेंगे। स्कूल भी सैनिटाइजर उपलब्ध करवाएंगे। एक बार विद्यार्थी स्कूल में प्रवेश करेगा तो छुट्टी के बाद ही बाहर जा सकेगा।

हरियाणा में भी सोमवार से सरकारी और निजी स्कूल खुलेंगे। हालांकि अभी नियमित कक्षाएं तो शुरू नहीं होंगी, लेकिन नौवीं से बारहवीं तक के विद्यार्थी शिक्षकों से किसी भी विषय को समझने और पढ़ाई संबंधी दूसरी समस्याओं के समाधान के लिए स्कूल आ सकते हैं। दिल्ली में कोरोना के मामले थमने का नाम नहीं ले रहे है। यही वजह है कि दिल्ली सरकार ने पांच अक्टूबर तक सभी स्कूलों को बंद करने का फैसला किया है। हालांकि इस दौरान ऑनलाइन कक्षाएं जारी रहेंगी। उत्तर प्रदेश की अपर मुख्य सचिव माध्यमिक शिक्षा आराधना शुक्ला ने बताया कि अभी स्कूलों को नहीं खोला जाएगा। आगे संक्रमण की स्थिति ठीक होने पर ही स्कूल खोलने पर विचार किया जाएगा।

पंजाब में अभी स्कूल, कालेज और कोचिंग सेंटर नहीं खोले जाएंगे। राज्य सरकार की ओर से शनिवार को ही इस संबंध में नए आदेश जारी किए गए हैं। राज्य में लगातार बढ़ रहे कोरोना के ग्राफ को देखते हुए सरकार अभी यहां बच्चों को स्कूल व कॉलेज बुलाने का खतरा नहीं लेना चाहती है।

इंदौर में 419 नए मरीज मिले, इसी हफ्ते दूसरी बार चार सौ पार आए संक्रमित

इंदौर, जेएनएन। रविवार को कोरोना संदिग्ध 2,517 मरीजों के सैंपल जांचे गए। इनमें से 419 मरीज पॉजिटिव आए। सितंबर में यह दूसरा मौका है जब एक ही दिन में मिलने वाले मरीजों की संख्या 400 से अधिक हुई है। 6 मरीजों की मौत की पुष्टि के बाद कोरोना से मरने वालों की संख्या 505 हो गई है। बुलेटिन के मुताबिक अब तक 2 लाख 74 हजार सैंपलों की जांच की जा चुकी है। इनमें से 19,937 मरीज पॉजिटिव पाए गए हैं। अब तक स्वस्थ होकर घर जाने वालों की संख्या 15,555 हो चुकी है। सक्रिय मरीजों की संख्या कम होकर 3,882 पर आ गई। 15 सितंबर को सक्रिय मरीजों की संख्या 5,399 थी। छह दिनों में 1400 सक्रिय मरीज कम हुए हैं। रविवार को एमटीएच अस्पताल में कोरोना संक्रमित महिला की सफल डिलीवरी कराई गई। महिला को पीसी सेठी अस्पताल से संदिग्ध मानकर एमटीएच अस्पताल रेफर किया गया था। यहां पर रैपिड एंटीजन टेस्ट में महिला पॉजिटिव पाई गई थी।

कृषि सुधार बिल का सीएम योगी ने किया स्वागत, कहा- किसानों को मिलेगी कानूनी बंधनों से आजादी

लखनऊ, जेएनएन। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने केंद्र सरकार के कृषक उपज व्यापार और वाणिज्य (संवर्धन और सरलीकरण) विधेयक 2020, कृषक (सशक्तीकरण व संरक्षण) कीमत आश्वासन और कृषि सेवा पर करार विधेयक 2020 का स्वागत किया है। सीएम योगी ने कहा कि कृषि सुधार के ये विधेयक किसानों को कानूनी बंधनों से आजादी दिलाएंगे। सीएम योगी ने राज्य सरकार की भी किसान हित के लिए प्रतिबद्धता जताई।

केंद्र सरकार के फैसले पर रविवार को बयान जारी कर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि ये विधेयक कृषि क्षेत्र में व्यापक बदलाव लाने वाले सिद्ध होंगे। इन विधेयकों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संकल्पों का प्रतिबिंब देखा जा सकता है। सीएम योगी ने कहा

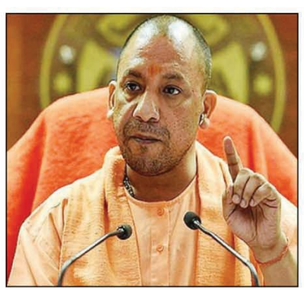

कि ये दोनों विधेयक पूर्ण रूप से कृषि और कृषकों के हित में हैं। किसानों की आय में कई गुना वृद्धि होगी। कृषि क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन आएगा, खेती-किसानी में निजी निवेश होने से तेज विकास होगा और रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि कृषि क्षेत्र की अर्थव्यवस्था मजबूत होने से देश की आर्थिक स्थिति और मजबूत होगी। उन्होंने कहा कि वर्तमान केंद्र व राज्य सरकार किसान हितों के संरक्षण के लिए कृतसंकल्पित हैं। इन विधेयकों के विरोध में राजनीतिक दलों द्वारा की जा रही टिप्पणियों को मुख्यमंत्री ने भ्रमित करने का कुत्सित प्रयास बताया है। किसानों से अपील की है कि वह किसी के बहकावे में न आएं। कुछ लोगों को किसानों की उन्नति रास नहीं आती। यह वही लोग हैं, जिन्होंने बीते छह-सात दशकों तक किसानों को महज वोट बैंक समझा।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि कृषि और किसान कल्याण की दिशा में राज्य सरकार द्वारा अनेक नीतिगत कदम उठाए गए हैं। लॉकडाउन के दौरान ही फल व सब्जी में 45 जिंसों को मंडी शुल्क से मुक्त कर दिया गया, जिसका किसानों को सीधा लाभ मिला। किसान अब अपने फल या सब्जी की राज्य में कहीं से भी बिक्री करने के लिए स्वतंत्र हैं। मंडी परिषद और स्टेट वेयर हाउसिंग कारपोरेशन द्वारा संयुक्त रूप से 37 मंडी परिसरों में पांच-पांच हजार मीट्रिक टन के गोदाम बनवाए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि इन गोदामों में किसान अपनी उपज 30 दिनों तक बिना किसी शुल्क के रख सकेंगे। इसके बाद सामान्य दरों पर 30 फीसद छूट पर किराया अनुमन्य होगा। 27 प्रमुख मंडियों को आधुनिक किसान मंडी के रूप में विकसित किया जा रहा है। 24 मंडियों में फल और सब्जी आदि को सुरक्षित रखने के लिए कोल्ड स्टोरेज व राइपनिंग चैंबर बनवाए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि राज्य सरकार कृषक उत्पादक संगठनों (एफपीओ) को प्रोत्साहित करने के लिए एक व्यापक नीति जल्द ला रही है।

संक्षेप समाचार

उपजिलाधिकारी ने अभियान चलाकर सरकारी जमीनों को किया चिन्हित

करछना। एक महीने से तहसील करछना में उपजिलाधिकारी आकांक्षा राना के निर्देशन मे चलाये जा रहे भूरक्षा अभियान के तहत सरकारी ग्राम सभा की भूमि को चिन्हित कर उस पर बोर्ड लगाया जा रहा है। इसके लिए राजस्व निरीक्षक और लेखपाल पत्रावलियों का निरीक्षण कर सरकारी ग्राम सभा की भूमि को चिन्हित कर उस पर बोर्ड लगवाया जा रहा है जिससे कि इस पर किसी भी प्रकार का अतिक्रमण न हो सके। उपजिलाधिकारी के इस जमीनी स्तर पर उठाये गये इस कदम की लोगों ने सराहना किया और यह उम्मीद जगी है कि अब भूमफिया किस्म के लोग इस पर कब्जा नहीं कर पायेगें।

मोटरसाइकिल सवार शिक्षक दंपत्ति से एक लाख के जेवरात छीन बदमाश फरार

जसरा। जसरा के ज्ञान भारती स्कूल के सामने मोटरसाइकिल सवार शिक्षक दंपत्ति से सोने का मंगल सूत्र छीन कर एक बदमाश भाग निकला । पीड़ित ने घूरपुर पुलिस को सूचना दे दी है।

रविवार की देर शाम लगभग 7:30 बजे जसरा के शिवपुरी कॉलोनी निवासी प्राथमिक शिक्षक ओम प्रकाश वर्मा पुत्र चंदन लाल वर्मा अपनी पत्नी रंजना वर्मा के साथ शहर से दवा करा कर लौट रहे थे। जसरा के ज्ञान भारती स्कूल के सामने दोनों पति पत्नी अपनी मोटर साइकिल खड़ी करके सड़क के पार स्थित एक चाट की दुकान

छिनैती के बाद शिक्षक दम्पत्ति से पूंछताछ करती पुलिस

से चाट बनवाने लगे। सड़क के दूसरी तरफ पत्नी रंजना वर्मा मोटर साइकिल के पास खड़ी थी। इतने में एक युवक पैदल आया तथा गले में पहने हुए 2 तोला सोने का मंगलसूत्र छीन कर जसरा बाजार की ओर भाग निकला। चोर चोर की आवाज सुनकर लोग दौड़े लेकिन वह युवक अपने अन्य साथी के साथ मोटर साइकिल से भाग निकला ।पीड़ित ने घटना की लिखित तहरीर घूरपुर पुलिस को दे दी है। थानाध्यक्ष घूरपुर भुवनेश चौबे तत्काल मय हमराहियों के मौके पर पहुंच कर चेकिंग अभियान शुरू कर दिया है।

ट्रक चालकों से अवैध वसूली करने वाले गिरफ्तार

नैनी। कोतवाली पुलिस ने चार लोगों को ट्रक चालकों से अवैध वसूली करते हुए रंगे हाथ गिरफ्तार कर रविवार को चालान कर दिए। जानकारी के मुताबिक नैनी कोतवाली क्षेत्र से संबंधित नेशनल हाइवे प्रयागराज-मिरजापुर, रीवा रोड समेत लेप्रोसी मिशन चौराहे के निकट बीते कई दिनों से कुछ लोग ट्रक चालकों को धमका कर अवैध वसूली करने में जुटे हुए थे। पुलिस उन सभी को पकड़ने के लिए कई बार प्रयास किए, लेकिन हर बार वह चकमा देकर फरार होने में कामयाब हो जाते थे। रविवार को नैनी इंस्पेक्टर राजकिशोर को जरिए मुखबिर से सूचना मिली की कुछ लोग राष्ट्रीय राजमार्ग पर खड़े ट्रक चालकों से अवैध रूप से पैसे वसूलने में लगे हुए हैं। सटीक सूचना मिलते ही नैनी इंस्पेक्टर ने एचएसआई रामाशीष यादव व कांस्टेबल अजीत कुमार को साथ लेकर उक्त स्थान पर पहुंचे और घेराबंदी करते हुए चार लोगों को गिरफ्तार कर नैनी कोतवाली उठा लाए। पुलिस के मुताबिक पकड़े गए आरोपियों में जॉर्ज टाउन थाना क्षेत्र के तुला रामबाग निवासी सतीश यादव व दुर्गेश यादव पुत्रगढ़ रामाश्रय यादव, बारा थाना क्षेत्र के रेही गांव निवासी छोटे लाल पुत्र स्वर्गीय राजाराम और गीज गांव निवासी कृष्ण मूरत यादव उर्फ छोटू यादव शामिल हैं। इन लोगों के कब्जे से ट्रकों से अवैध वसूली किए गए लगभग सात हजार रुपए भी बरामद किया गया है। पुलिस ने पकड़े गए सभी आरोपियों के खिलाफ नैनी कोतवाली में विभिन्न धाराओं में रिपोर्ट दर्ज कर चालान कर दिए।

करोना काल में अध्यापक भी भूले संस्कार

मेज पर पैर रखकर सोते हुए प्रधानाचार्य

करछना। वि0खं0 करछना के एक पूर्व माध्यमिक विद्यालय मे प्रधान अध्यापक मेज पर पैर रख कर चैन से सोते हुए उनका वीडियो वायरल होने से क्षेत्र मे चर्चा का विषय बना हुआ है। क्षेत्र के पूर्व माध्यमिक विद्यालय ककरम में शनिवार को स्कूल के समय में प्रधान अध्यापक श्री गंगेश नारायण पाण्डेय कुर्सी पर बैठे हुए मेज पर पैर रखकर चैन से सोते हुए दिखाई पड़े जिनका किसी ने वीडियो बनाकर वायरल कर दिया जो क्षेत्र मे चर्चा का विषय बना हुआ है। वहीं शिक्षाविदों और कई लोगों ने वायरल फोटो देख कर कहा कि इस तरह शिक्षकों के बल पर सरकार का शिक्षा की गुणवत्ता व स्तर को उठाने की बात कह रही है जब कि शिक्षक को नहीं पता कि विद्यालय मे शिक्षक को किस तरह से रहना चाहिए तो ऐसे अध्यापक बच्चों मे कहां से अच्छी शिक्षा व संस्कार दे सकेगें। इस बावत खण्ड शिक्षा अधिकारी संतोष श्रीवास्तव से पूंछने पर बताया कि अभी यह प्रकरण मेरे संज्ञान मे नही है यदि ऐसा है तो नोटिस भेज कर शिक्षक से स्पष्टीकरण मांगा जायेगा और कार्यवाही की जायेगी। साथ ही उन्होने बताया कि अभी कुछ दिन पहले ही वह निलंबन से बहाल हुए हैं।

प्रदेश के बिगड़े हालात पर सपाई करेंगे तहसील का घेराव

प्रदेश नेतृत्व के आवाहन पर उपजिलाधिकारी को देंगे ज्ञापन

फूलपुर। प्रदेश में बढ़ते अपराध व वर्तमान सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ सपा का एक दिवसीय धरना प्रदर्शन आज फूलपुर तहसील मुख्यालय पर किया जाएगा। बाबूपुर गांव में रविवार को जनसंपर्क कर कार्यक्रम को सफल बनाने की अपील करते हुए सपा के नवनियुक्त जिला उपाध्यक्ष राम सुमेर पाल ने बताया कि प्रदेश नेतृत्व के आवाहन पर सोमवार को सपा कार्यकर्ता तहसील का घेराव कर राज्यपाल को संबोधित ज्ञापन उपजिलाधिकारी को सौंपेंगे। उन्होंने कहा कि आज जनता का प्रदेश में बुरा हाल है और सरकार अपनी उपलब्धियों का झूठा पुलिंदा बांध रही है। सपा नेत्री अनीता श्रीवास्तव ने बताया कि प्रदेश में महिलाओं के खिलाफ बढ़ रहे अत्याचार, बलात्कार, महंगाई, हत्या, भ्रष्टाचार, व किसानों ,गरीबों ,मजदूरों ,बेरोजगारों, छात्रों,नौवजवानों की विभिन्न समस्यायों के साथ ही खाद, बीज की कालाबाजारी करने समेत

कार्यक्रम की सफलता हेतु जनसंपर्क करते हुए सपा जिला उपाध्यक्ष रामसुमेर पाल, अनीता श्रीवास्तव व नसीरुद्दीन राईन

अन्य समस्याओं को लेकर सपा कार्यकर्ता तहसील मुख्यालय पर प्रदेश सरकार के खिलाफ आवाज बुलंद करेंगे। सपा नेता व लोहिया वाहिनी के निवर्तमान राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य नसीरुद्दीन राईन ने कार्यक्रम की सफलता के लिए सभी कार्यकताओं से सुबह ग्यारह बजे बाबूपुर मोड़ पर पहुंचने की अपील की। इस मौके पर आसुतोष तिवारी, दिनेश यादव, शौरभ यादव, फिरोज राईन, अखिलेश यादव, नेहाल कादरी, परबेज आलम, सर्वेश यादव, अमर सिंह यादव, अरशद खान, सुनील यादव, रवीन्द्र पाल मौजूद रहे।

वर्कर्स यूनियन द्वारा 1968 के रेलवे के शहीदों की दी गई श्रद्धांजलि

श्रद्धाजंलि अर्पित करते व अपनी आवाज बुलंद करते हुए रेलवे यूनियन के कर्मी व स गठन पदाधिकारी कॉमरेड साथीगण

प्रयागराज। नेशनल मूवमेंट टू सेव रेलवे के आह्वान पर देश भर में इण्डियन रेलवे इम्प्लाइज फेडरेशन से जुड़े सभी जोनों एवं उत्पादन इकाइयों में शहीदों को विनम्र श्रद्धांजलि, श्रद्धांजलि सभा आयोजित किया गया । उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय में नार्थ सेन्ट्रल वर्कर्स यूनियन द्वारा आयोजित श्रद्धांजलि सभा को सम्बोधित करते हुए इंडियन रेलवे इम्प्लाइज फेडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष व नार्थ सेण्ट्रल रेलवे वर्कर्स यूनियन के महामंत्री कॉमरेड मनोज पाण्डेय ने कहा कि 19 सितंबर 1968 में रेलवे के सरकारी कर्मचारियों की हड़ताल में शहीद हुए शहीदों की शहादत परम्परा निभाने का वक्त अब आ गया है। उन्होंने कहा कि 1968 की हड़ताल केंद्र सरकार ने द्वितीय केंद्रीय वेतन आयोग द्वारा अनुशंसित डीए फामूर्ले को स्वीकार करने से इनकार करने के बाद शुरू हुई थी। उस वक्त रेलवे कर्मचारियों ने हड़ताल को सफल बनाने के लिए बहादुरी के साथ मैदान में कुद पडे थे। तत्कालीन सरकार ने अपेक्षित रुप में आंदोलन पर बर्बर हमला किया। जिसमें 9 हमारे बहादुर कामरेड शहीद हो गए।

कामरेड मनोज ने कहा कि साथी परेश सान्याल- बंगाईगाँव (एन एफ रेलवे) रामेन अचार्जी -मरीयानि (एन एफ रेलवे) किशन गोपाल - बीकानेर (एन रेलवे) लछमन साह - पठानकोट (एन रेलवे) राजबहादुर - पठानकोट (एन रेलवे) देवराज - पठानकोट (एन रेलवे) कुलदीप सिंह - पठानकोट (एन रेलवे) घामा - पठानकोट (एन रेलवे) अर्जुन सिंह - नई दिल्ली (की शहादत को भुलाया नही जा सकता है। श्री पांडेय ने कहा कि 19 सितंबर 1968 रेलवे आंदोलन के अमर शहीदों को के सहादत के दिन

कॉमरेड मनोज कुमार पाण्डेय

हम सभी शपथ लेते है कि रेलवे को बचाने के लिए और देश को बचाने के लिए अपनी व अपने संगठन की पहचान के साथ रेलवे में कार्यरत सभी कटेगरी के कर्मचारियों के साथ छात्रों, किसानों, नौजवानों,आम जनता से एकता बनाकर जन हित में, देश हित में नेशनल मूवमेंट टू सेव रेलवे को मजबूत करेंगे। औ? स्वयं संवैधानिक रूप से लोकतांत्रिक व शान्तिपूर्वक तरीके से पूरी भागीदारी की जाएगी।

कामरेड ने कहा आज हम शहीद दिवस पर शपथ लेते हुए भारत सरकार से मांग करते हैं कि -जनता की सवारी रेल बेचने पर रोक लगाओ, उत्पादन इकाइयों का निगमीकरण/निजीकरण करना बंद करो, -ठढर समाप्त करो,डढर बहाल करो, सर्विस रिव्यू के नाम पर जबरी रिटायर करना बंद करो, केंद्रीय कर्मचारियों/पेंशनर्स को महंगाई भत्ते को तुरंत जारी करो, -ठेका प्रथा पर रोक लगाओ, बेरोजगार युवाओं को रेल में भर्ती करके खाली पदों को तत्काल भरो।

श्रद्धांजलि सभा में मुख्य रूप से कामरेड डी.बी. सिंह, का. संजय तिवारी, का.सैय्यद इरफात अली, का.सैय्यद आफताब अहमद, का.अफरोज आलम, का. रुक्मानंद पाण्डेय, का.वरुण कुमार, का.शिवेन्द्र प्रताप सिंह, का. राजकुमार, का.इफ्तेखार अहमद, का.सौरभ पाण्डेय, का. राम यतन प्रसाद , का.दीपक कुशवाहा, का.मोहम्मद इरशाद, का. सुरेश श्रीवास्तव, का. मॉरीश कोलिश, का. अमित शुक्ला, का. भैय्या लाल, का. सुनील आर्या, का. रामानन्द मौर्य, का. मनमोहन आदि मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

पुलिस महानिदेशक से न्याय की लगाइ गुहार

हनुमानगंज। पखवाड़े भर पूर्व हुई मारपीट और उसमें हुई एफआईआर पर थाने की पुलिस द्वारा कोई कार्यवाही न किये जाने पर भुक्तभोगी ने पंजीकृत डाक से पत्र भेजकर पुलिस महानिदेशक से न्याय की गुहार लगाते हुए आरोपियों से मिले थाने के एक दरोगा के खिलाफ कार्यवाही की मांग की है। सरायइनायत थाना क्षेत्र के कोटवा गाँव मे जमीनी विवाद को लेकर पखवाड़े भर पूर्व दो पक्षों में हुई मारपीट में एक महिला को गम्भीर चोटे आयी थी जिसमें भुक्तभोगी नन्दलाल की तहरीर पर पुलिस ने आधा दर्जन लोगों को नामजद किया था जिसमें पुलिस ने आरोपी एक दबंग महिला का शान्ति भंग में चलान कर खाना पूर्ति कर ली भुक्तभोगी कार्यवाही के लिए बार बार थाने का चक्कर लगा रहा है पुलिस के निर्देश पर कई बार आरोपियों की लोकेशन भी पुलिस को बता चुका फिर भी पुलिस ने कोई कार्यवाही नहीं कर रही है थाने के एक दरोगा की मिलीभगत से भुक्तभोगी को न्याय नहीं मिल पा रहा है दरोगा का संरक्षण आरोपियों को इस तरह प्राप्त हैं कि पुलिस दबिश देने नहीं जा रही है इतना ही नहीं जिस दिन भुक्तभोगी थाने पर जा कर कार्यवाही की मांग करता है इस बात का फोन तत्काल आरोपियों को थाने का दरोगा बता देता है अब पुलिस के सह पर आरोपी भुक्तभोगी को धमकी भी देने लगा है कार्यवाही न होने पर भुक्तभोगी ने पुलिस महानिदेशक को पंजीकृत डाक से पत्र भेजकर न्याय की गुहार लगायी है।

सीएचसी करछना मे 15 लोगों की हुयी कोरोना जांच

करछना। रविवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र करछना में 15 लोगों की कोरोना की जांच हुयी जिनमे एक भी केस पाजेटिव न मिलने से राहत की सांस ली। और लगातार कईदिनो से पाजेटिव केस मिलने की सिलसिले मे विराम लगने से स्वास्थ्यकर्मियों ने कहा कि लोग संक्रमण से बचने के लिए मास्क और सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करें जिससे इस पर रोक लोग सके और लोगों को संक्रमण होने से बचाया जा सके।

रामलीला, कोरोना के बीच असमंजस

हनुमानगंज। इसी असमंजस के साथ रविवार को आदर्श रामलीला कमेटी बरईपुर प्रयाग की एक बैठक की गई। जिसमें इसबार रामलीला मंचन से अधिक कोरोना चर्चा का विषय बना रहा। लोग महज इसबात से ससंकित थे कि पूरी तैयारी करने के बाद कहीं साहब लोगों का रामलीला बंद करने का फरमान न आजाए।

उक्त बैठक कमेटी के संरक्षक जगदीश नारायण त्रिपाठी के अध्यक्षता में की गई जिसमे मुख्य रूप से आगामी रामलीला के तैयारियों पर चर्चा तथा पात्रों का चयन किया गया। इस दौरान कमेटी के अध्यक्ष पं रामचंद्र त्रिपाठी, आयब्यय निरीक्षक सुरेश नारायण तिवारी मंत्री नंदकिशोर त्रिपाठी, उपाध्यक्ष रुपनारायण त्रिपाठी, कोषाध्यक्ष बृजनारायण त्रिपाठी पं, रोमबोध मिश्र, शिवशंकर तिवारी, सुरेन्द्र तिवारी, अशोक कुमार तिवारी, महेन्द्र प्रताप सिंह, हिन्छ नारायण तिवारी आदि मौजूद रहे।

बदमाशों ने युवक को मारी गोली, घायल

प्रयागराज। रविवार की दोपहर गंगा के कछार में एक युवक को बदमाशों ने गोली मार दी और बदमाश युवक को धमकी देते हुए फरार हो गए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने लहूलुहान हालत में युवक को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया। गोली युवक के पैर में लगी। पुलिस मामले की छानबीन कर रही है। फिलहाल आरोपित पुलिस की पकड़ से दूर हैं।

शिवकुटी थाना क्षेत्र में रविवार की दोपहर मुकेश नामक युवक को बदमाशों ने गोली मारी दी। घटना के बाद हमलावर धमकी देते हुए भाग निकले। शिवकुटी निवासी मुकेश गंगा की कछार में खेती करता है। रविवार दोपहर वह कछार में था। आरोप है कि इसी दौरान सनी नामक युवक ने उस पर तमंचे से फायर कर दिया। पैर में गोली लगते ही वह जमीन पर गिर पड़ा तो हमलावर धमकी देते हुए भाग निकल। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची छानबीन की।

इस संबंध में शिवकुटी थाने के इंस्पेक्टर महेश सिंह का कहना है कि गोली मारने का अभी कारण स्पष्ट नहीं हो सका है। मामले की जांच की जा रही है। तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

दो गांव में जमीनी विवाद को लेकर हो सकती थी अप्रिय घटना

लालापुर। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक प्रयागराज सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी के कुशल निर्देशन में रविवार को लालापुर थानाध्यक्ष अमित कुमार राय व उनकी टीम ने शांति भंग करने वाले सात अभियुक्तों को गिरफ्तार कर के चलान किया गया। डायल 112 के इवेंट नं० 2639 की सूचना पर लालापुर पुलिस ग्राम भटपुरा पहुंची जहां दो पक्षों में जमीन के बटवारे को लेकर विवाद था दूसरी ओर थाना क्षेत्र के ग्राम पण्डुआ में भी जमीन संबंधित विवाद था जिसमें शांति भंग के अंदेशे में सात अभियुक्तों को गिरफ्तार कर उपजिला मजिस्ट्रेट बारा के लिए भेज दिया गया। यदि इन सभी को गिरफ्तार न किया जाता तो निश्चित ही कोई अप्रिय घटना घट सकती थी। गिरफ्तार हुए अभियुक्तों मे महेश कुमार आदिवासी पुत्र मेवालाल आदिवासी उम्र 32 वर्ष,मुशीर अली पुत्र स्व० कब्बन उम्र 35 वर्ष निवासी पण्डुआ थाना लालापुर। दयाराम मिश्रा पुत्र स्व० छेदीलाल मिश्रा उम्र 55 वर्ष,विनोद मिश्रा पुत्र स्व० राममूरत मिश्रा उम्र 40 वर्ष, शिवकुमारी पत्नी दयाराम मिश्रा उम्र 50 वर्ष, शिवलाल मिश्रा पुत्र स्व०जयराम मिश्रा उम्र 59 वर्ष, गुड़िया मिश्रा पत्नी जमुना प्रसाद मिश्रा उम्र 30 वर्ष निवासी भटपुरा, थाना लालापुर।

आगामी चुनाव को लेकर महिला कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने कसी कमर

बैठक में उपस्थित महिला कांग्रेस कार्यकर्ता व पदाधिकारी

प्रयागराज। आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर महिला कांग्रेस कमेटी प्रयागराज की महिला कार्यकताओं ने कमर कस ली है। विगत कई वर्षों से उत्तर प्रदेश में कांग्रेस सत्ता से बाहर है। रविवार को महिला कांग्रेस पार्टी की जिला अध्यक्ष खुशना वेदा फारुकी तथा शहर अध्यक्ष अल्पना निषाद के नेतृत्व में बैठक संपन्न हुई। जिसमें आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर समीक्षा की गई। शहर तथा जिला में गांव गांव घूम घूम कर कांग्रेस पार्टी की नीतियों को महिलाओं के समक्ष रखेंगी। जिला अध्यक्ष ने कार्यकताओं को संबोधित करते हुए कहा कि अब वह समय आ गया है जब महिला कार्यकर्ता घर घर जाएंगी तथा कांग्रेस पार्टी को मजबूत करने का काम करेंगी जिला अध्यक्ष ने समीक्षा बैठक को संबोधित करते हुएकहा कि महिलाओं की समस्याओं को लेकर कांग्रेस पार्टी शुरू से ही आवाज उठाती रही है भविष्य में भी उठाएगी। महिलाओं के हित के लिए कांग्रेस पार्टी कंधे से कंधा मिलाकर चलेगी। 2022 में आगामी विधानसभा चुनाव में महिला कांग्रेस कार्यकर्ता अहम भूमिका निभाएंगे। समीक्षा बैठक मे गंगा पार जमुना पार के सभी ब्लॉक तथा वार्ड अध्यक्ष और जिला कमेटी के पदाधिकारी मौजूद रहे। कल्याणी, साहिबा, सविता कमला, गीता, उर्मिला, संगीता सुशीला, गुड्डू गीत उषा पुष्पा सहित काफी संख्या में महिला कांग्रेस कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

प्रयागराज हलचल

संक्षेप समाचार

विकास प्राधिकरण ने नगर निगम को दिए दस करोड़

प्रयागराज। विकास प्राधिकरण ने अपनी सात कॉलोनियां नगर निगम को हस्तानांतरित करने के बाद दस करोड़ रुपये भी नगर निगम को दे दिए। दूसरी किस्त में साढ़े सात करोड़ रुपये कुछ दिनों बाद दिए जाएंगे। इस धनराशि से नगर निगम कॉलोनियों में सुविधाएं विकसित करेगा। हालांकि सात कॉलोनियों में सड़क और अंदरूनी रास्तों के निर्माण पर करीब 25 करोड़ रुपये से ज्यादा का खर्च आना है। पीडीए की सबसे बड़ी आवासीय योजना कालिंदीपुरम में एक सड़क निर्माण पर चार करोड़ 96 लाख और दो अन्य सड़कों के निर्माण पर तीन करोड़ खर्च होने हैं। इसका प्रस्ताव बनाकर पूर्व में शासन को भेजा गया था। करीब एक करोड़ का खर्च कॉलोनी के अंदर के रास्तों पर होना है। कुल नौ करोड़ के खर्च के एवज में पीडीए ने कालिंदीपुरम के लिए छह करोड़ 88 लाख रुपये दिए हैं। स्थानीय पार्षद अखिलेश सिंह का कहना है कि कालिंदीपुरम को बजट देने में भेदभाव किया गया है। नौ करोड़ 96 लाख का बजट पहले तैयार किया गया था। ऐसा न कर छह करोड़ 88 लाख ही दिया गया है जो गलत है। नगर निगम के मुख्य अभियंता सतीश कुमार का कहना है कि पीडीए ने पहली किस्त के रूप में दस करोड़ रुपये दिए हैं। अगली किस्त भी जल्द मिलेगी। जिस कॉलोनी को जितना बजट आवंटित हुआ है उसी हिसाब से काम होगा। आगे चलकर धीरे-धीरे अन्य काम भी होंगे।

शांतिपुरम आवास योजना फाफामऊ -3.46 करोड़ , त्रिवेणी पुरम आवास योजना झूसी- 51.00 लाख, अवंतिका आवास योजना नैनी -2.96 करोड़, कालिंदीपुरम आवास योजना 6.88 करोड़, देवघाट झलवा आवास योजना - 73.39 लाख , देव प्रयागम आवास योजना -2.91 करोड़ रुपये ।

दो हादसों में तीन की मौत पर बवाल, पथराव व लाठीचार्ज

लालगोपालगंज के लखनऊ राजमार्ग पर दो घटनाओं में तीन की मौत पर ग्रामीणों का फूटा गुस्सा

लालगोपालगंज। दो अलग-अलग हादसे में साइकिल सवार दो युवक समेत एक वृद्धा की दर्दनाक मौत हो गई। घटना से गुस्साए ग्रामीणों ने लखनऊ राजमार्ग कठौआ पुल में चक्का जाम कर दिया। घटनास्थल पर पहुंची पुलिस से आक्रोशित ग्रामीणों झड़प के बाद पत्थरबाजी शुरू कर दिया। जिसमें कुछ पुलिसकर्मी चोटिल हो गए। हालात काबू करने के लिए पुलिस ने टियर गैस छोड़ा। पुलिस ने उपद्रवियों पर लाठीचार्ज किया।

लालगोपालगंज के इब्राहिमपुर गांव के रहने वाला मुकेश सरोज और अंकित विश्वकर्मा भोर में गंगा स्नान करने श्रृंगवेरपुर के लिए रवाना हुए। एक ही साइकिल पर सवार दोनों श्रद्धालु लखनऊ राजमार्ग के हकठौआ पुल पहुंचे ही थे कि पीछे से आरही एक ट्रक ने साइकिल सवार मुकेश सरोज 16 वर्ष पुत्र राम आसरे को रौंदा दिया। जिसकी मौके पर ही मौत हो गई। गांव का ही अंकित विश्वकर्मा 18 वर्ष पुत्र अरविंद हादसे में गंभीर रूप से घायल हो गया। जिसको मौजूद लोगों ने आनन-फानन इलाज के लिए जिला अस्पताल भेजा। जहां रास्ते में ही उसकी मौत हो गई। दोनों युवकों की मौत से गांव में कोहराम मच गया। घटनास्थल पर ग्रामीण पहुंचकर चक्का जाम कर दिया। घटना की सूचना पर पहुंची पुलिस से ग्रामीणों की झड़प होने के बाद देखते ही देखते पथराव शुरू हो गया। जिसमें कुछ पुलिसकर्मी चोटिल हो गए। हालात बेकाबू होता देख सोरांव, होलागढ़ और मऊआइमा थाना की पुलिस मौके पर पहुंच गई। जहां पुलिस ने बल का प्रयोग करते हुए आंसू गैस के गोले दागे। उपद्रव कर रहे ग्रामीणों पर मजबूरन पुलिस ने लाठीचार्ज किया। पुलिस ने किसी तरह शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

इसी प्रकार दूसरी घटना लालगोपालगंज के किलहना पुर मोड़ पर हुई। कमल सरोज अपनी माता अंजू और नानी शिवकली 65 वर्ष हथिगहां थाना के समसपुर गांव से अपने घर बाघराय थाना के जाटू पर जा रहे थे। 8:30 बजे सुबह एक अज्ञात ट्रक ने बाइक को टक्कर मार दिया। जिसमें नानी शिवकली की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि बाइक चालक कमल सरोज और माता अंजू गंभीर रूप से घायल हो गए। दोनों को अस्पताल में भर्ती कराया गया। वृद्धा का शव पुलिस ने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया दिया।

प्रयागराज एसएसपी सर्वश्रेष्ठ तिवारी रविवार को शाम लगभग 5 बजे घटनास्थल पर पहुंच गए। जहां पीड़ित परिवार का ढांढस बंधाया। सड़क दुर्घटना को रोकने के लिए राष्ट्रीय राजमार्ग पर डिवाइडर बनाए जाने जिम्मेदारों को निर्देश दिया।

हादसे में मौत के बाद आक्रोशित ग्रामीणों द्वारा चक्काजाम के दौरान लगा भीषण जाम

राते बिलखते मृतक के परिजन

पुलिस से झड़प के बाद घंटों चला गोरिल्ला युद्ध

लखनऊ राजमार्ग जाम करने को लेकर पुलिस और ग्रामीणों में झड़प हुई। जिसके बाद पथराव शुरू हुआ। चक्का जाम होने से के दोनों तरफ वाहनों की कतार लगी रही। पुलिस ने लाठियां भांजी। उपद्रवियों पर काबू पाने के लिए टियर गैस छोड़ी गई। घंटो बाद हालात काबू में आया। तब जाकर कहीं राष्ट्रीय राजमार्ग का आवागमन बहाल हुआ।

पुलिस की हिरासत में डेढ़ दर्जन बाइकें

घटनास्थल पर जाम लगाने वालों की भीड़ जमा हो गई थी। वहीं कुछ तमाशा देखने वाले भी मौजूद थे। जो सड़क किनारे अपनी बाइक खड़ी कर तमाशबीन बने रहे। पुलिस ने सड़क किनारे खड़े वाहनों को अपनी हिरासत में लेकर थाने पहुंचा दी। जिसमें लोगों की लगभग डेढ़ दर्जन बाइक शामिल हैं।

बवाल के बाद बाइकों को अपने कब्जे मं लेती पुलिस व सूचना के बाद घटनास्थल पर पहुंचे एसएसपी हालात का जायजा लेते हुए

घटनास्थल पर पहुंचे प्रयागराज एसएसपी

दोनों युवकों की मौत की घटना से लालगोपालगंज में मची अफरा-तफरी के बाद प्रयागराज एसएसपी सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी लालगोपालगंज लगभग 4:30 बजे शाम को पहुंचे। जहां पीड़ित परिवार से मिलकर उनका ढांढस बंधाया। मौके पर मौजूद जिम्मेदारों से घटना पर रोक लगाने के लिए सड़क के बीच डिवाइडर बनाए जाने का निर्देश दिया।

बाप ने बेटी पर किया हमला, हालत नाजुक

प्रयागराज। अतरसुइया थाना क्षेत्र के दरियाबाद इलाके में एक पिता ने अपनी बेटी पर ही प्राणघातक हमला कर दिया। सूचना पुलिस को भी तो मौके पर पहुंची पुलिस महिला को अस्पताल में भर्ती कराया है जहां उसकी स्थिति नाजुक बनी हुई है।

जानकारी के अनुसार पल्लवी भंसाली अतरसुइया थाना क्षेत्र के दरियाबाद इलाके में अपने परिवार के साथ रहती हैं। बताया जा रहा है कि परिवार में जमीनी विवाद चल रहा था ' रविवार को किसी बात को लेकर तू तू मैं मैं हुई पिता और जीजा ने पल्लवी भंसाली पर किसी वजनी चीज से से हमला कर दिया। वह खून से लहूलुहान हो गई उसके सिर में काफी चोटें आई हैं। सूचना पुलिस को हुई तो मौके पर पहुंची अतरसुइया पुलिस ने घायल अवस्था में पल्लवी भंसाली को अस्पताल में भर्ती कराया है जहां उनकी हालत नाजुक बताई जा रही है' इस मामले में पुलिस हर एंगल से जांच पड़ताल करने में जुटी हुई है। अतरसुइया पुलिस का कहना है कि मामला जमीनी विवाद का है पुलिस जांच पड़ताल कर रही है ' हालांकि थाने में अभी कोई तहरीर नहीं मिली है।

घायल बेटी

संगम क्षेत्र में सेना की ओर से कराई गई मुनादी,तीर्थ पुरोहितों को हटने का दिया निर्देश

तीर्थ पुरोहितों ने लगाई सांसद से गुहार

प्रयागराज। प्रयागराज के संगम क्षेत्र में सेना द्वारा संगम आने वाले सभी तीर्थ यात्रियों के धार्मिक कृत्यों को पूरी तरह से रोकने और तीर्थ पुरोहितों को संगम छोड़ देने की सूचना देने के पश्चात अखिल भारतीय तीर्थ पुरोहित महासभा के राष्ट्रीय महासचिव चन्द्रनाथ चकहा मधु जी ने तुरंत स्थानिय सांसद फूलपुर केशरी देवी जी को मामले की जानकारी दिया, सांसद जी के दिल्ली में होने की जानकारी उनके पुत्र पूर्व विधायक श्री दीपक पटेल जी ने दिया और तुरंत कांफ्रेंस काल पर सांसद केशरी देवी एवं चकहा जी की वार्ता कराई मधु जी ने सेना द्वारा संगम क्षेत्र कराए गए मुनादी की बात सुनकर सांसद ने भी नाराजगी व्यक्त की और कहा कि आप हमको पूरे मामले की एक अप्लिकशन फैक्स करें। उन्होंने कहा कि वो दिल्ली में हैं ' रक्षामंत्री जी से भेंट कर उन्हें अवगत कराएंगे और जल्द ही समस्या का पूरी तरह से निदान कराने का अस्वासन दिया है। वहीं महासभा के राष्ट्रीय प्रवक्ता अमितराज वैध ने कहा कि सेना ऐसा कैसे कर सकती है। इसमें किसी षड़यंत्र के तहत धर्म पर घात करने का जो प्रयास इसे कभी सफल नहीं होने देंगे। पिछले दिसम्बर माह में प्रयागराज एवं फूलपुर की सांसद रीता बहुगुणा जोशी एवं केशरी देवीके नेतृत्व में महासभा के पदाधिकारियों का प्रतिनिधि मंडल रक्षामंत्री जी भेंट किया था जिसपर रक्षामंत्री ने मामले के जल्द से जल्द निस्तारण करने का आश्वासन भी दिया था। फूलपुर की सांसद ने कार्य आगे बढ़ाया प्रस्ताव तैयार करने हेतु उन्होंने पूर्व में प्रयाग में समीक्षा बैठक में भाग लेने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से भी इस मुद्दे और प्रस्ताव पर चर्चा की थी। जिसपर मुख्यमंत्री ने जिला प्रशासन को उचित कार्यवाही हेतु निर्देश भी दिए परन्तु देश में व्याप्त कोरोनावायरस महामारी के चलते कोई ठोस कार्यवाही नहीं हो सकी। अचानक सेना द्वारा हो रहा कार्य दुर्भाग्यपूर्ण है, धार्मिक कृत्य भारतीय परम्परा की शोभा है। देश के तीर्थ में विराजमान देवी देवताओं की मान्यता वेद पुराणों ग्रन्थों में मिलते हैं। भारत के करोड़ों हिन्दू जनमानस की आस्था केन्द्र बिन्दु मां गंगा यमुना सरस्वती जी हैं। प्रयाग मोक्ष की भूमि है अर्द्धकुंभ महाकुंभ माघ मेला सब प्राचीन काल से होते आए हैं। वरिष्ठ सदस्य श्रवण कुमार शर्मा ने कहा कि यह धर्म पर कुठाराघात करने की साज़िश रची जा रही है जिसे हम कभी कामयाब नही होने देंगे। हजारों वर्षों से तीर्थ यात्रियों का धार्मिक कृत्य संगम क्षेत्र में होता आया है, मुगल शासन, अंग्रेजी शासन,देश की सरकारों ने कभी इस तरह के निंदनीय कार्य नहीं किया। इसका परिणाम सरकार को भूगतना पड़ सकता है। हम किसी किमत पर हार नहीं मानेंगे उक्त अवसर पर संरक्षक हरिजगन्नाथ शास्त्री रामकृष्ण तिवारी माधवानंद शर्मा पवन शास्त्री अनिल मिश्रा दिनेश तिवारी भय्यो महाराज राकेश शर्मा राहूल तिवारी सुरेश शर्मा पुष्कर तिवारी राकेश कुमार शर्मा सहित अन्य तीर्थ पुरोहित उपस्थित रहे।

माफिया अतीक के कार्यालय पर चला प्रशासन का बुलडोजर

अतीक अहमद के कार्यालय को ढहाते हुए

प्रयागराज। अपराधियों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत योगी सरकार की कार्रवाई जारी है। माफिया अतीक अहमद के कार्यालय पर रविवार को प्रशासन का बुलडोजर चला और अवैध निर्माण को जमींदोज कर दिया गया। कार्रवाई के दौरान पीडीए के अधिकारी भारी पुलिस बल के साथ मौके पर मौजूद रहे।

उक्त जानकारी देते हुए अपर पुलिस अधीक्षक नगर दिनेश कुमार सिंह ने बताया पूर्व सांसद अतीक अहमद का खुल्दाबाद के चकिया में करबला के समीप स्थित कार्यालय की बाउंड्री वॉल और कुछ कमरे अवैध तरीके से बनाया गया है। ऐसा प्रयागराज विकास प्राधिकरण के अधिकारियों का कहना है। जिसे आज गिराया जा रहा है।

गौरतलब है कि शनिवार को अतीक अहमद के भाई अशरफ के साले एवं उसके करीबी के अवैध कब्जे को प्रशासन ने जिलाधिकारी के निर्देश पर कौशाम्बी के सल्लाहपुर में स्थित ग्राम समाज की 600वर्ग गज जमीन से अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की गई। बताते चलें कि माफिया अतीक गुजरात के अहमदाबाद जेल में बंद हैं। उनके भाई अशरफ को भी पुलिस गिरफ्तार करके जेल भेज चुकी है। लेकिन लखनऊ में दर्ज हुए एक मुकदमे में बड़ा बेटा उमर फरार है। उसकी तलाश के लिए लगातार यूपी एसटीएफ लगी हुई है।

सर्वर की समस्या से परेशान हो रहे आधार बनाने वाले

प्रयागराज। सर्वर की समस्या डाकघरों में तेजी से बढ़ती जा रही है। सर्वर डाउन होने से आधार बनाने वालों को घंटों इंतजार करना पड़ेगा। लोगों की सुविधाओं के लिए चंद घरों में आधार बनाने की सुविधा शुरू की गई है, लेकिन सर्वर डाउन होने से लोगों का आधार नहीं बन रहा है। बीएसएनएल के जीएम कार्यालय और बस स्टैंड के पास खुले ग्राहक सेवा केंद्र में पिछले छह महीने से आधार नहीं बनाया जा रहा है। प्रधान डाकघर, कचहरी डाकघर में आधार कार्ड बनाने की सुविधा दी जा रही है, लेकिन सुबह 11 बजे के बाद सर्वर डाउन हो जाता है, जिससे लोग परेशान होते हैं। कोरोना काल में लोगों की भीड़ न लगे इसलिए एक दिन में महज 40 लोगों का ही आधार कार्ड बनाया जा रहा है। इसके बावजूद भी सर्वर डाउन होने से 10 से 20 लोगों का ही आधार बन पा रहा है?।

निर्वाचन अधिकारी से समस्त शिक्षकों, कर्मचारियों को स्नातक एमएलसी हेतु मतदाता बनाने की मांग

प्रयागराज। अटेवा पेंशन बचाओ मंच, उत्तर प्रदेश की जनपद इकाई प्रयागराज के पदाधिकारियों की बैठक जिला संयोजक अशोक कनौजिया की अध्यक्षता में सेवा समिति विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज रामबाग में रविवार को हुई। जिसमें जो स्नातक हैं उन सभी कर्मचारियों का मानव संपदा पोर्टल से आवश्यक कागजात अंकपत्र व आधार प्राप्त कर सभी शिक्षकों व कर्मचारियों को स्नातक एमएलसी चुनाव हेतु अनिवार्य रूप से मतदाता बनाये जाने की मांग की गई। अटेवा प्रदेश उपाध्यक्ष एवं इलाहाबाद-झांसी खण्ड स्नातक निर्वाचन क्षेत्र से प्रत्याशी डॉ हरि प्रकाश यादव द्वारा पदाधिकारियों को 30 अक्टूबर तक सदस्यता अभियान चलाने तथा संगठन की मजबूती के लिए समस्त ब्लॉक इकाइयों को आवश्यकता अनुसार पुनर्गठित करने का निर्देश के साथ-साथ एमएलसी चुनाव हेतु ब्लाकों को जिम्मेदारी सौंपी गयी। उन्होंने कहा कि विभिन्न जनपदों में भ्रमण के दौरान पाया गया कि अधिकतर शिक्षक व कर्मचारी स्नातक होने के बावजूद स्नातक एमएलसी चुनाव में मतदाता नहीं बने हैं। अतः इलाहाबाद-झांसी खण्ड स्नातक निर्वाचन क्षेत्र के मुख्य निर्वाचन अधिकारी तथा क्षेत्रान्तर्गत समस्त जिला निर्वाचन अधिकारियों से प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च शिक्षा के साथ साथ अन्य विभाग के वे समस्त कर्मचारी जो स्नातक हैं उन सभी कर्मचारियों का मानव संपदा पोर्टल से आवश्यक कागजात अंकपत्र व आधार प्राप्तकर सभी शिक्षकों व कर्मचारियों को स्नातक एमएलसी चुनाव हेतु अनिवार्य रूप से मतदाता बनाये जाने की मांग की। प्रदेश प्रवक्ता उपेन्द्र वर्मा ने कहा कि समस्त स्नातकधारी चाहे वह नौकरी कर रहा हो या बेरोजगार हो सबका नाम मतदाता सूची में शामिल कराना चुनाव आयोग की जिम्मेदारी है और जवाबदेही भी है।

नरेंद्र मोदी के रूप में भारत को मजबूत प्रधानमंत्री मिला : गिरधर मालवीय

प्रयागराज। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जीवन कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर आधारित सेवा सप्ताह व्याख्यान माला में मुख्य वक्ता के रूप में भारत रत्न कुलाधिपति काशी विश्वविद्यालय एवं पूर्व न्यायाधीश गिरधर मालवीय ने संबोधित करते हुए कहा कि मोदीजी का हर कार्य आदर्श स्थापित करता है। उनका पूरा जीवन राष्ट्र के प्रति समर्पित है। उनके रूप में आज देश को एक मजबूत प्रधानमंत्री मिला है, जो आज विश्व में सबसे लोकप्रिय नेता हैं।

उन्होंने कहा कि एक समय अमेरिका मोदीजी को वीजा नहीं दे रहा था और आज उनको गले लगा रहा है। यह मोदी की कार्य क्षमता एवं लोकप्रियता का सबसे बड़ा प्रमाण है। मोदीजी के नेतृत्व में आज भारत को विश्व में सम्मान मिल रहा है। उनका हर एक छोटा कार्य महान भारत के निर्माण की दिशा और दशा तय कर रही है। कहा मोदीजी द्वारा आज प्रयागराज का नक्शा बदल गया है। दलों के नेता अपने परिवार के लिए जीते हैं और मोदीजी के लिए पूरा देश ही परिवार है। जिसके लिए वह 20 घंटे लगातार कार्य करते रहते हैं। श्री मालवीय ने कहा कि मुझे गर्व महसूस होता है कि विश्व के सबसे बड़े नेता नरेंद्र मोदी ने अपने लोकसभा चुनावी क्षेत्र वाराणसी का प्रस्तावक बनाने का अवसर प्रदान किया। इसके प्रति मैं आभार प्रकट करता हूं और ईश्वर से उनके दीघार्यु होने की कामना करता हूं। विशिष्ट अतिथि के रूप में डिजिटल पीटीएम के चेयरमैन अजय शेखर ने कहा कि मोदीजी हम सब के आदर्श हैं। आज डिजिटल क्रांति जो पूरे देश देश में आई है उसके मुख्य सूत्रधार हमारे देश के प्रधानमंत्री की दूरदर्शिता है। उनकी हर एक योजना डिजिटल इंडिया के माध्यम से किया जा रहा है। जिसके कारण भ्रष्टाचार पर लगाम लगी और दलालों का खेल खत्म होता नजर आ रहा है। मोदीजी का जीवन सादगी भरा है और उनकी विदेश नीति बहुत ही अच्छी है। जिसके कारण विश्व में भारत की साख बन रही है। अध्यक्षता करते हुए उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जीवन स्वामी विवेकानंद के विचारों से भरा हुआ है। जो गरीब परिवार में पैदा होकर गरीबों के लिए ही काम कर रहे हैं। वह कठिन परिस्थितियों में भी विचलित नहीं होते और अपने बेहतरीन संगठनात्मक कुशलता के आधार पर वह भारतीय जनता पार्टी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लिए कार्य किए और आज भारत को मजबूत नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं। उनके नेतृत्व ने गुजरात जब भूकंप से पीडित था तक उन्होंने वहां की मुख्यमंत्री की कमान संभालते हुए गुजरात को जीरो से हीरो बनाने का काम किया और आज भारत को जीरो से हीरो बनाने का कार्य कर रहे मोदी जी के नेतृत्व में देश के अंदर जितने भी लटके एवं अटके कानून एवं मुद्दे थे उनको समाप्त किया गया। जिसका प्रमाण सभी के सामने है। भारत आज देश के दुश्मनों को उसी की भाषा में जवाब दे रही है। कार्यक्रम का संचालन उत्तर प्रदेश मंत्री श्रीमती मीना चैबे एवं स्वागत आभार काशी क्षेत्र के अध्यक्ष महेश चंद्र श्रीवास्तव ने तथा धन्यवाद समापन गोरखपुर क्षेत्र के अध्यक्ष धर्मेंद्र ने किया। प्रयागराज महानगर गणेश केसरवानी ने सभी के प्रति आभार प्रकट किया। इस अवसर पर आईटी विभाग द्वारा प्रधानमंत्री के जीवन पर बने स्लाईड डिजिटल प्रदर्शनी द्वारा उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर दर्शन डालते हुए प्रदर्शनी दिखाई गई। जिसका उद्घाटन भाजपा महानगर अध्यक्ष गणेश केसरवानी ने किया। व्याख्यानमाला में डॉ. कीर्तिका अग्रवाल, डॉ. एसओझा, डॉ. सुशील सिन्हा, रणजीत सिंह, अवधेश चंद्र गुप्ता, राजेंद्र मिश्र, कुंज बिहारी मिश्रा, देवेश सिंह, वरुण केसरवानी, राजेश आदि रहे।

सेवा सप्ताह अंतर्गत व्याख्यान माला में संबोधित करते हुए

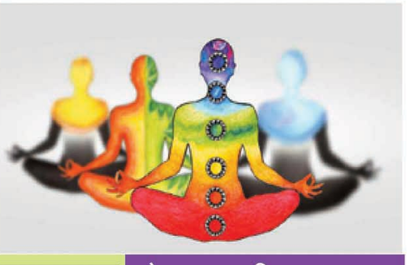

प्रयागराज सोमवार, 21 सितम्बर, 2020

क्रियायोग सन्देश

मृत्यु : अस्तित्व का समापन नहीं बल्कि अनंत में विलय की दिव्य घटना

मृत्यु अस्तित्व का समापन नहीं है, मृत्यु अनंत में मिलन की परमाआनन्ददायक अहलादकारी अनुभूति है। मृत्यु दृश्य जगत से अदृश्य जगत की यात्रा है। सामान्यतया प्रत्येक व्यक्ति को एक दिन मृत्यु का साक्षात्कार करना पड़ता है। क्रियायोग की साधना से मनुष्य अवस्था में मृत्यु में होने वाली संपूर्ण घटनाओं का अनुभव और उसको इच्छाशक्ति से नियंत्रित करने की सामर्थ प्राप्त कर लेता है। यही चैतन्य मृत्यु की अवस्था है तथा इसी को निर्विकल्प समाधि कहा गया है। क्रिया योग के अभ्यास से चैतन्य अवस्था में मृत्यु (निर्विकल्प समाधि) की अनुभूति होने पर मृत्यु भय शून्य हो जाता है। ऐसी अवस्था में साधक इच्छा शक्ति से मरना सीख लेता है। जिसने मरना सीख लिया वही शाश्वत जीवन की अनुभूति कर सकता है। वह अनुभूति जन्य ज्ञान के द्वारा प्रमाणित रूप में अपने अतीत अर्थात अनेक पिछले जन्मों तथा भविष्य को देख लेता है और अस्तित्व की अमरता का साक्षात्कार कर लेता है। निर्विकल्प समाधि अवस्था की अनुभूति करना जीवन की उच्चतम उपलब्धि है। इस उपलब्धि की प्राप्ति होने पर जीवन अनन्त आनन्द और अलौकिक ज्ञान से प्रकाशित हो जाता है। क्रियायोग की साधना से स्वास्थ्य, शांति, ज्ञान शक्ति आदि प्राप्त करने के लिये प्रयास नहीं करना पड़ता बल्कि ये सभी स्वतः प्राप्त हो जाते हैं।

क्रियायोग के अभ्यास से अंतिम उपलब्धि जिसे निर्विकल्प समाधि कहा गया है, उन्हीं को प्राप्त होती है जो भय रहित स्थित में चैतन्य मृत्यु का साक्षात्कार करने की प्रबल इच्छा शक्ति रखते हैं। जैसे-जैसे मनुष्य मृत्यु में प्रवेश करता है, वैसे-वैसे शब्द स्पर्श, रूप, रस और गंध की अनुभूति विलुप्त होने लगती है। शरीर के सारे अंग निष्क्रिय होने लगते हैं। जागृत अवस्था में इस अवस्था के प्रकट होने पर मनुष्य डरने लगता है। आत्मज्ञान की प्राप्ति में सबसे बड़ी बाधा मृत्युभय है। भय होने पर उच्च आध्यात्मिक अवस्था की प्राप्ति संभव नहीं है। क्रियायोग के नियमित अभ्यास से भय धीरे-धीरे शून्य हो जाता है और साधक अमर तत्व की अनुभूति कर लेता है।

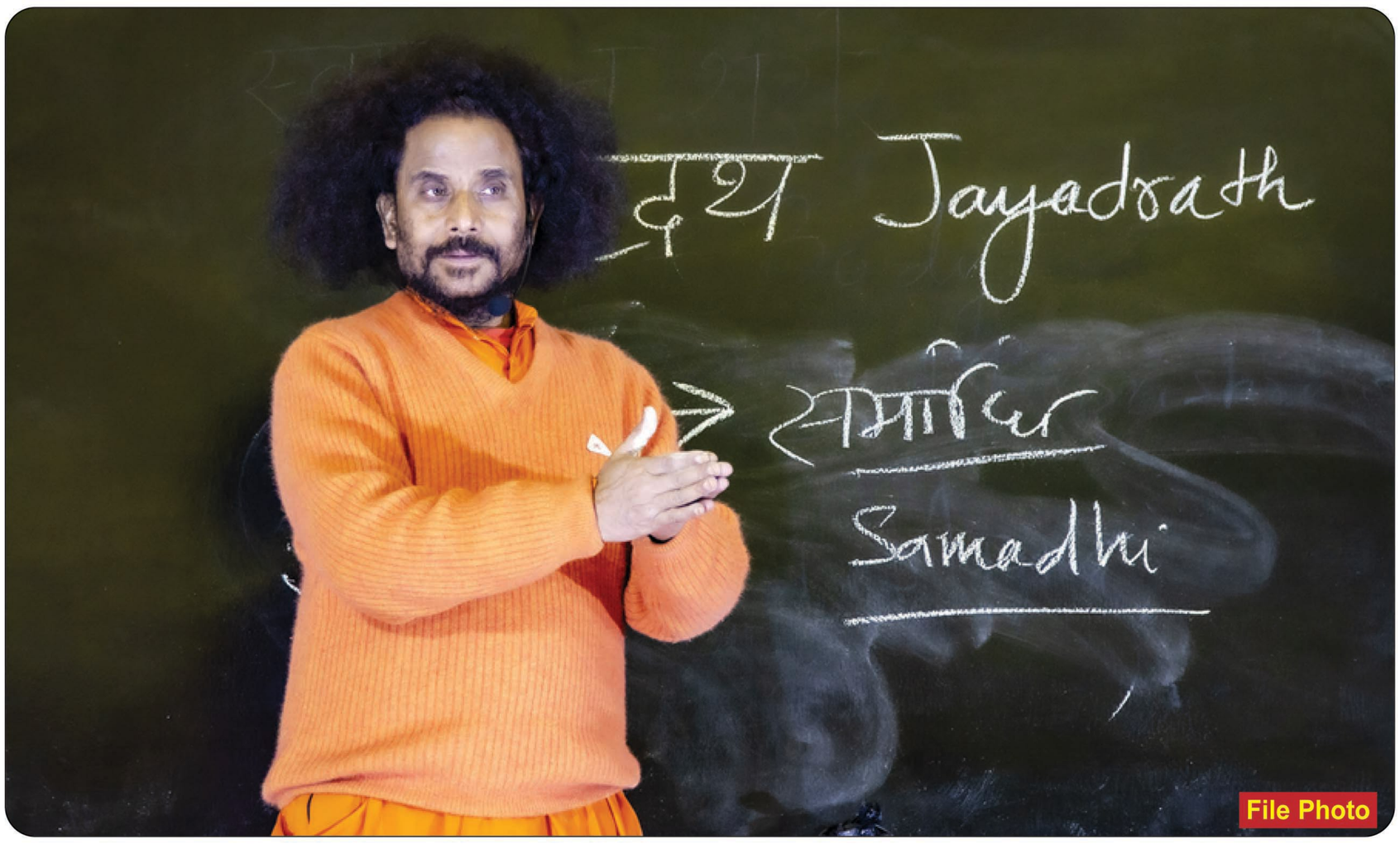

File Photo

मृत्यु से साक्षात्कार

मृत्यु से साक्षात्कार करने पर पता चला कि मृत्यु आत्मानुभूति है। मृत्यु अस्तित्व का समापन नहीं बल्कि अनंत में विलय की दिव्य घटना है। मृत्यु हमें ले जाती है दृश्य जगत से परे अदृश्य जगत में, जहां माया का प्रभाव कम और सत्य का प्रकाश अधिक है। मृत्यु सीमित चैतन्य का असीमता मे विलय है। यह विश्व से विराट, विराट से तेजस, तेजस से हिरण्यगर्भ, हिरण्यगर्भ से प्राज्ञ, प्राज्ञ से ईश्वर की यात्रा है। इस यात्रा की पूर्णता तक पहुंचना ही मोक्ष है। मृत्यु कालातीत अनुभूति है, जहां अतीत, वर्तमान और भविष्य की सीमाएं अदृश्य हो जाती हैं। मृत्यु आदि, मध्य और अंत के बीच दूरी की शून्यता है। मृत्यु परम जागरण की अवस्था है। मृत्यु अज्ञान से ज्ञान, अविद्या से विद्या, साकार से निराकार, दृश्य से अदृश्य की यात्रा है। मृत्यु का चैतन्य पूर्वक आलिंगन समाधि (परमात्मा अनुभूति) है।

Death is Not the Cessation of Existence but the Divine Event of Merging into The Infinite

Death is not the cessation of Existence. Death is the Eloquent Realization of union with the Infinite. Death is the journey from visible to invisible. Every person has to face death some day. With the practice of Kriyayoga, one attains the power to have full control over death. This is the state of conscious death and is known as Nirvikalpa Samadhi.

The practice of Kriyayoga results in the experience of death in the conscious state (nirvikalpa samadhi) whereby one no longer has any fear of death. In such a state, the seeker learns to have complete control over death and can experience death willingly. Only one who has learned how to die consciously can experience eternal life and can also realize many past and future lives with certainty. Realizing the state of nirvikalpa samadhi is the highest achievement of life.

On the attainment of this achievement, life becomes illuminated with eternal bliss and extraordinary knowledge. Then health, peace, true knowledge etc. are attained without much effort. With the practice of Kriyayoga, the ultimate goal of fearlessly and consciously experiencing death, Nirvikalpa Samadhi, is attained. This can be achieved only by those who have a strong will-power to experience conscious death.

In death, all sense perceptions of sound, touch, vision, taste and smell disappear. All parts of the body become inactive. If we experience this in the awake state, we will have great fear. Fear of death is the biggest obstacle in the attainment of Self-realization. It is not possible to attain this higher spiritual state when there is fear. With the regular practice of Kriyayoga, we gradually overcome the fear of death and realize our Immortal nature.

File Photo

Consciously experiencing Death reveals that death is Self-realization. Death is not the cessation of existence but the Divine event of merging with the Infinite. Death takes us beyond the visible world into the invisible world, where the influence of Maya is less and the light of Truth is greater. Death is the merging of limited consciousness into Infinite God-Consciousness. It is the journey from Vishwa to Viraat Consciousness, from Viraat to Tejas, from Tejas to Hiranyagarbha, from Hiranyagarbha to Pragya, from Pragya to Ishwar. Reaching the end of the journey is known as salvation. Death is a timeless experience, where the boundaries of past, present and future become invisible. Death is the disappearance of distance between the beginning, middle and end of time. Death is the state of ultimate awakening. Death is the journey from ignorance to knowledge, from form to formless and from visible to invisible. The conscious welcome of death is the state of Samadhi (God-realization).